समुदाय में इतिहास की खोज

स्थानीय इतिहास पर शिक्षकों व बच्चों के साथ कार्य
राबाउप्रावि बहड़, निवाई

अनिल गुप्ता
राकेश कारपेन्टर
ब्लॉक गतिविधि केन्द्र
अजीम प्रेमजी फाउंडेशन निवाई

कैसे पता करें कब क्या हुआ

स्थानीय इतिहास पर शिक्षकों व बच्चों के साथ कार्य
राबाउप्रावि वहड निवाई
बच्चें कक्षा 6 व 7 संख्या– 28
शिक्षक – 3
संदर्भ व्यक्ति– अनिल गुप्ता व राकेश

हमारे विद्यालयों में सामाजिक अध्ध्यन विषय के प्रति शिक्षकों का नजरिया हमेशा से ही उपेक्षित रहा है। इसका अंदाजा इसीसे लगाया जा सकता है कि न तो विद्यालयों में इस विषय को पढाने वाले प्रशिक्षित शिक्षक ही होते है और न ही अच्छे प्रशिक्षण, और पाठयपुस्तकें तो एकदम नीरस ही है। इस विषय के प्रति अक्सर यही सोच होती है कि इसे तो कोई भी पढा लेगा। विषय के तौर पर देखें तो कई प्रकार की समस्यायें दिखाई देती है। एनसीईआरटी की नई पाठयपुस्तकें जो कक्षा 8 में इस वर्ष से लागू हुई है उनके प्रति भी शिक्षकों का नजरिया एकदम विपरीत जान पडता है क्योंकि हमारी पुस्तकें तो बदल गई पर विषय के प्रति शिक्षकों की समझ तो वही है। पर कई वार मुझे लगता है कि केवल समस्यायें गिना भर देने से क्या होगा जबतक शिक्षकों के सामने हम कुछ करके नही बताये। इसिलिए मैने कुछ नया करने के लिए शिक्षकों के साथ मिलकर इतिहास में स्थानीय इतिहास पर काम करने की एक योजना बनाई।

स्थानीय इतिहास पर काम करने का बडा उदेश्य यह भी था कि बच्चों मे इतिहास के प्रति यह समझ पैदा करना कि इतिहास वास्तव में लिखा कैसे जाता है एक इतिहासकार किन साक्ष्यों के आधार पर भूतकाल की घटनाओं का सही विश्लेष्ण प्रस्तुत करता है क्या हम भी ऐसा कर सकते है। स्थानीय इतिहास पर काम की योजना को चार चरणों में किया जाना है प्रथम चरण में बच्चों से इतिहास को लेकर संवाद करना, दूसरे चरण में किसी ऐतिहासिक स्थान का भ्रमण, व साक्ष्य एकत्रित करना, तीसरे चरण में साक्ष्यों के परिपेक्ष्य में लोगों से बातचीत करना । और अन्त में साक्ष्यों का विश्लेषण कर निष्कर्ष तक पहुचना।

आओ हमारे गॉव के इतिहास का पता करें।

कार्य की शुरूआत राबाउप्रावि वहड से की व इस काम में कक्षा 6 व 7 के बच्चों के साथ यह कार्य किया। इसके लिए पहलें दो दिन इतिहास को लेकर बच्चों से गहन बातचीत की गई। जिसमें बच्चे इतिहास से क्या समझते है अगर उन्हे पुरानी किसी चीज के बारे में पता लगाना है तो कैसे पता करेंगें कि कब क्या हुआ। इसके आधार क्या होगें। प्रारम्भ बच्चों के साथ इतिहास पर संवाद से की गई जिसमें भूतकाल की कुछ घटनाओं को लेकर बच्चों से विस्तार से चर्चा की गई जिसमें मुझे यह लगा कि बच्चें इतिहास से केवल इतना ही समझते है **कि राजा महाराजों की बातें इतिहास में लिखी होती है और वे सत्य ही होती**

है। बच्चों को इतिहास से सवंधित खोजबीन का एक आलेख पढनें को भी दिया गया। इसके साथ ही बच्चों से बहड की पहाडी पर स्थित किलें को लेकर बातचीत कीं जिसमें बच्चों के बहुत से मिथक सामने आये ज्यादातर बच्चों का मत था कि किले में भूत रहता है वहॉ एक मन्दिर बना है जिसमें लोग वीमारियों का इलाज करवाने जाते है।

इस किले में सोना चॉदी भी है पर कोई ला नही सकता क्योंकि सॉप इसकी देखभाल करता है। इस प्रकार बच्चों के बहुत से अनुभव थे जो उन्होने समूह में शेयर किये इस पर हमने विस्तार से चर्चा की। बच्चों से कहा कि क्या आप घर में बातचीत कर वुर्जगों यह पता कर सकते है कि इस किले को किसने बनवाया होगा क्यों बनवाया पहाडी पर ही क्यों बनवाया, लोग कहॉ रहते थें आदि बातें । बच्चों ने तुरन्त हॉ कह कर बात का समर्थन किया कि हम पता करके आयेगें। शायद ये इसिलिए भी कि बच्चों कों काम में थोडा मजा आने लगा था। मैनें कुछ मोटी मोटी बातें बच्चों को कापी में लिखवा भी दी ताकि उन्हें याद रहे।

- ✓ पहाडी पर स्थित किला किसने बनवाया होगा
- ✓ कब बना होगा
- ✓ यह पहाडी पर ही क्यों बनवाया,
- ✓ यहॉ का राजा व जनता उस समय कैसे रहते होगें उनकी दिनचर्या के बारे में पता कि वे कैसे जीवनयापन करते होगें। आने जाने के साधन व खेती कैसी होगी।

बच्चों द्वारा एकत्र की गई जानकारी

दूसरें दिन बच्चें जो जानकारी लेकर आये वाकई हमें उत्साहित करने वाली थी बच्चों ने खूब सारी जानकारी बुर्जूगों से पता कि ***जैसे सुगना ने बताया कि किला 250 वर्ष पहले सोगानसिंह राजा ने बनवाया था और उसके एक लडका था जिसका नाम महेन्द्रसिंह था। इसी प्रकार कोमल ने बताया कि किलें में तो राजा और उसका परिवार रहता था परन्तु साधारण लोग नीचे गॉव में रहते थे। राजा ने किले को पहाड पर इसिलिए वनवाया था ताकि उसके उपर यदि कोई आक्रमण हो तो वह किले से उसका मुकावला कर सके। इसी प्रकार मधु ने बताया कि यहॉ के लोग उस समय अगल अलग फसलों की खेती करते थे पर पानी की समस्या थी अत राजा ने पास ही एक बडा तालाब वनवाया था आज भी है। इस प्रकार की बहुत सी जानकारी बच्चें अपनी कापी में लिखकर लाये जिस पर हमने कल हुई बातचीत को जोडते हुए बच्चों से खुलकर चर्चा की।***

आओं अवलोकन कर साक्ष्य जुटायें

कार्य के अगले चरण में बच्चों से इस पर बातचीत की कि हमारे पास और क्या तरीके हो सकते है जिनसे हम इस किले में बारें में ज्यादा से ज्यादा जानकारी एकत्रित कर पायें। एक बालिका ने कहा कि हम किलें

में चलकर देख सकते है और राजा के रिश्तेदारों से बातचीत कर सकते है वे किले के नीचे वाले मकान में रहते है। अगले दिन किले का अवलोकन व साक्ष्य एकत्र करने की योजना बनाई व जरूरी चीजों की सूची व वहॉ से क्या जानकारी ले सकते है इसकी सूची बनाई गयी।

और बच्चों व शिक्षकों ने किले का अवलोकन किया। अवलोकन में किले की दीवारें उनमें प्रयोग की गई सामग्री, किले के दरवाजें वहॉ लिखी सामग्री,अलग अलग स्थानों का उस समय क्या उपयोग होता होगा। सामान रखनें के व्यवस्था, युद्व से रक्षा, खाने पीने की वस्तुऐं, दैनिक दिनचर्या की चीजें, पानी की व्यवस्था, आने जाने के मार्ग आदि पर बच्चों ने गहनता से अवलोकन किया यहॉ सबसे महत्वपूर्ण बात यह देखी गई कि बच्चें एक दूसरें से खूलकर चर्चा कर रहे थे और अपने अनुमान लगा रहे थै अपने अवलोकन को कापी में लिख रहे थे। यहॉ बच्चों के साथ किले को लेकर शिक्षकों हमने व बच्चों ने खूब बातचीत की। शिक्षकों ने बताया कि इससे पहले हमने बच्चों को इतनी बातचीत करते नही दिखें यहॉ तो बच्चें खूलकर एक दूसरे से खूब सवाल जबाव कर रहे थे एक बच्चें के सवाल का जबाव दूसरा देता और इस प्रकार गहन चर्चा चली। अवलोकन में किले में पानी के उस समय के स्रोत्रों में बडें बडें संग्रहण हेतु कुऍं व बावडी इनका रखरखाव पर बच्चों ने समझा, इसी प्रकार आने जाने के साधनों में घोडें व राजा द्वारा न्याय के लिए बनाया गया खुला स्थान भी बच्चों ने किले में देखा। किलें के दरवाजे जो कि अभी खंडित अवस्था में है इन पर बच्चों ने बातचीत की। अवलोकन के उपरान्त बच्चों ने अपने अवलोकन व बातचीत को व्यवस्थित लिखनें का कार्य किया।यहॉ यह बात महत्वपूर्ण है कि बच्चें इतिहास के बारें में जानने को उत्सूक व साक्ष्यों के आधार पर अपने अनुमान गढ रहे थे।

समुदाय में इतिहास की खोज

कार्य के आगामी चरण में बच्चों व शिक्षकों ने गॉव के लोगों से अपने अवलोकनों के आधार पर इस किलें इतिहास के बारें में बातचीत की। इसके लिए बच्चों ने पहलें अपने अवलोकन व अब तक प्राप्त तथ्यों को व्यवस्थित किया।

समुदाय के लोगों से हम किन किन चीजों के बारें में बातचीत कर सकते है इस पर एक चर्चा की गई व बातचीत के बिन्दुओं को लिखा। बिन्दु

इस प्रकार से तय किये गये

- ✓ यह किला किस राजा ने बनवाया होगा और पहाडी पर ही क्यो बनवाया
- ✓ राजा किलें मे रहता था तो लोग कहॉ रहते होगें
- ✓ किले में सुरक्षा, पानी , जीवनयापन, यातायात, के क्या साधन रहे होगें
- ✓ लोगों की दिनचर्या को जानना यथा कामधंधे क्या रहे होगें, खेती, सिचाई, आने जाने के साधन, त्योहार, आपसी लेनदेन, बीमारियॉ, मुद्रा, किले को बनाने वाले कारीगरों को मजदूरी या वेतन,
- ✓ किला नष्ट कैसे हुआ

उपरोक्त बाते तय होने पर बच्चों ने गॉव के बुर्जगों से दो स्थानों पर गॉव में ही बातचीत की व बच्चों ने खुलकर किले व गॉव के बारें में जानकारी एकत्र की। बुर्जगों ने अपनी स्थानीय भाषा में बच्चों के सवालों के जबाव दिये। यह बहुत ही रोचक रहा गॉव के बुर्जगों ने अपने पास या उनके पूर्वजों से सुनी बातों को बच्चों को खुलकर बताया। बच्चों ने सारी जानकारियों को अपनी अपनी कॉपी में लिखा।

इस बातचीत के बाद बच्चों ने अब तक विभिन्न सोत्रों से एकत्र की गई जानकारियों को एक जगह रखा व अपने गॉव व इस किलें के इतिहास के बारें में विश्लेष्ण कर निष्कर्ष निकाला। इस पूरी प्रक्रिया में बच्चों ने स्थानीय इतिहास के बारें में जिन बातों का पता किया उसे संक्षिप्त में इस रूप में देख सकते है।

बहड के इस किले का निर्माण आज से लगभग 250 वर्ष पहले राजा महेन्द्रसिंह ने रक्ताचल पर्वत पर किया। आसपास से समतल मैदान व उची पहाडी पर किले के निर्माण का कारण यह रहा होगा क्योंकि बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा की जा सके क्यों कि किले का निर्माण खडी पहाडी पर इस प्रकार किया गया ताकि बाहरी शत्रु किले के तीनों और से आक्रमण करे तो किले से ही उसका मुकावला किया जा सके। किलें के चारो और एक मजबुत दीवार भी बनाई गयी जिसमें वुर्ज में छेदों की रचना इस प्रकार से की गई कि आक्रमण का सामना आसानी से किया जा सके। इसके लिए राजा ने किले में पर्याप्त मात्रा में गोला वारूद, व सुरक्षा संवधी हथियार रखनें के लिए गोदाम भी बनवाया। किले में पानी के दो बडे होद बने है जिनको ढककर रखा जाता है इन होदों में बरसात का पानी एकत्र होता था जो संभवत सालभर किले में रहने वाले लोगो के काम आता था। पूरे किले को तीन भागों में बाटा गया हे जिसमें संभवत एक भाग जो अन्तपुर जैसा हे व उचाई पर स्थित है वह राजा का भवन रहा होगा जहॉ वह अपने परिवार के साथ रहता होगा जब कि बाहरी किले मे बने छोटे कमरे सैनिकों व उनके परिवार के रहे होगें। किले में एक तरफ एक खुला सा स्थान है जो संभवत उस समय राजा न्यायिक कार्यो के लिए करता होगा। जैसा कि बुर्जगों ने बताया कि किले में ही राजा अपराधों के फैसले दिया करता था। उस समय दंड विधान भी बडा कठोर होता था ताकि कोई दुवारा अपराध न कर सके। उस समय लोग खेती अधिक करते थे पर पानी की अधिक समस्या थी बुर्जगों ने बताया कि पानी की निरन्तर समस्या के कारण राजा ने बहड के पास ही एक तालाव खुदवाया जो आज भी है। खेती में बैलों का उपयोग करते थे। आने जाने के साधनों के तौर पर राजा औरउसका परिवार घोडे पर परन्तु सामान्यजन बैलगाडी से ही जाते थें। त्योहार बडें ही अच्छे होते थे व इनकी तैयारी महीनें पहले से ही शुरू हो जाती थी। सभी लोग मिलकर त्यौहार मनाते थे व राजपरिवार के लोग भी जनता के बीच आकर त्यौहार

मनाते थे राजसवारी भी निकलती थी। लेनदेन में उससमय एकआना से लेकर रूप्यें तक का चलन था। बुर्जगों ने इस पर विस्तार से जानकारी दी।

इस प्रकार इस पूरी प्रकिय्रा में बच्चों ने काफी रोचक तरीके से काम किया शिक्षकों का कहना था कि यह एक जीवंत प्रक्रिया है इससे बच्चों में इतिहास के प्रति एक नजरिये का विकास हुआ है और इतिहास को पढनें में अब बच्चें इसी प्रक्रिया के तहत चीजो को समझेगे ।

धन्यवाद

अनिल गुप्ता

.